Bio Vet Innovator Magazine

Volume 1 (Issue 1) JULY 2024

OPEN ACCESS
Popular Article

जैविक खेती में खरपतवार प्रबंधन कैसे करें

कविता भादू एवं भूपेन्द्र कस्वां*

सहायक प्रोफेसर, श्री करण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर

***Corresponding Author:** bhupendrakaswan1989@gmail.com

DOI - https://doi.org/10.5281/zenodo.12703021

Received: July 01, 2024
Published: July 10, 2024

© All rights are reserved by **भूपेन्द्र कस्वां**

वर्तमान खेती में रासायनिक उर्वरक और कीट नाशक रसायनों का प्रयोग दिनों-दिन बढ़ रहा है। इसके परिणामस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण एवं भूमि की उर्वरा शक्ति का ह्रास हो रहा है। साथ ही साथ फल, सब्जी तथा अनाज की गुणवत्ता में भी गिरावट आ रही है। इसलिए आम आदमी में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता बढ़ाने एवं पोष्टिक भोजन प्राप्त करने के लिए जैविक विधि वर्तमान समय की आवश्यकता बन गई है। जैविक कृषि से फसलों का उत्पादन करने पर खरपतवारों की विकट समस्या उत्पन्न होती है क्योंकि इसमें किसी रासायनिक खरपतवारनाषी का प्रयोग वर्जित है। अतः खरपतवार प्रबंधन के लिए हमें इसके मूलभूत सिद्धांतो जैसे रोकथाम, नियंत्रण एवं उन्मूलन का अनुपालन करना आवश्यक हो जाता है। जैविक कृषि में नियंत्रण कार्य मुख्यतः कृषि विधियों को अपनाकर अथवा जैविक खरपतवारनाषियों का प्रयोग कर किया जाता है। इस लेख में जैविक विधि से खरपतवार प्रबंधन कैसे करें की जानकारी का उल्लेख है।

रोकथाम:

यह प्रचलित कहावत है कि किसी बीमारी की रोकथाम इलाज से बेहतर है। रोकथाम में हमें निम्न विशेष बातों का ध्यान रखना चाहिए: -

- जैविक प्रमाणित बीजों का ही उपयोग करें जो खरपतवार रहित,शुद्ध और साफ हों।
- खेती में प्रयोग आने वाले कृषि उपकरण खरपतवार मुक्त हों। कृषि उपकरणों को एक खेत से दूसरे खेत में जाने से पूर्व अच्छी तरह साफ करना चाहिए अन्यथा खरपतवारों के बीज एक खेत से दूसरे खेत में पहुंच जाते है।
- खरपतवार मुक्त एवं भलीभांति अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद का उपयोग करें।
- खेत की मेढ़ पर खरपतवार न पनपने दें।
- सिंचाई नालियाँ खरपतवार मुक्त रहे एवं सिंचाई वितरिकाओं की समय–समय पर सफाई करें। सिंचाई जल खरपतवार मुक्त रहे।

नियंत्रण:

नियंत्रण कार्य मुख्यतः कृषि विधियों को अपनाकर अथवा जैविक खरपतवारनाषियों का प्रयोग कर किया जाता है: -

- उचित फसल चक्र अपनाकर खरपतवार नियंत्रण किया जाता सकता है क्योंकि अधिकांष खरपतवार फसलों के सहचर्य से उगते है जैसे गेहूं फसल के साथ गुल्ली डंडा (फेलेरिस माइनर)।
- स्टेल सीडबेड अथवा पलेवा करके (फसल बुवाई से पूर्व

Citation: भादू, कविता., & कस्वां, भूपेन्द्र. (2024). जैविक खेती में खरपतवार प्रबंधन कैसे करें. In BIO VET INNOVATOR Magazine (Vol. 1, Issue 1, pp. 5–6). BIO VET INNOVATOR Magazine. https://doi.org/10.5281/zenodo.12703021

खेत में पानी देकर खरपतवारों को उगने का मौका देते है जिन्हें बाद में जुताई कर नष्ट कर दिया जाता है, इसके पश्चात् फसल की बुवाई की जाती है। जिससे खरपतवारों की संख्या में अत्यधिक कमी हो जाती है।)

- सौरीकरण या सोलेराइजेशन विधि से खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है।
- फसल की सही समय पर बुआई, उचित बीज दर, उचित दूरी, आवश्यक पोषक तत्व एवं जल प्रबंधन करके खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है।
- अंतरवर्तीय फसलें उगाकर: अंतरवर्तीय फसलें भूमि को आच्छादित कर लेती हैं फलस्वरूप खरपतवार नहीं उग पाती हैं।
- जैविक विधि से खरपतवार प्रबंधन के लिए मल्चिंग का प्रयोग करें। मल्च (अवरोध परत) के रूप में प्लास्टिक या फसलों के अवशेष का प्रयोग किया जा सकता है।
- जैविक विधि से खरपतवार प्रबंधन के लिए गर्मियों में गहरी जुताई करें।
- खरपतवारों के नियंत्रण हेतु समय-समय पर निराई गुड़ाई करते रहने से विशेष लाभ होता है।
- गाजर घास प्रभावी क्षेत्रों में मित्र कीट जैसे जाग्रोग्रामा बाइकोलोराटा का प्रयोग करें।

उन्मूलन:

इस विधि में खरपतवारों के बीज बनने से पहले अथवा पुष्पण अवस्था में आने के पूर्व हाथ से उखाड़कर भूमि में गड्ढा खोदकर दबा दिया जाता है या जला दिया जाता है। अन्यथा इनकी संख्या बढ़ जाने के उपरांत उन्मूलन करना अत्यंत दुष्कर एवं खर्चीला हो जाता है।

निष्कर्ष:

जैविक खेती में खरपतवार नियंत्रण करना एक चुनौती भरा कार्य है क्योंकि इसमें रासायनिक खरपतवारनाषियों का प्रयोग निषेध है। अतः खरपतवार प्रबंधन के मूलभूत सिद्धांतो जैसे रोकथाम, नियंत्रण एवं उन्मूलन का अनुपालन कर खरपतवार नियंत्रण किया जाता है। जैविक कृषि में उपरोक्त खरपतवार प्रबंधन अपनाया जाये तो उत्पादन अधिक होगा।

Citation: भादू, कविता., & कस्वां, भूपेन्द्र. (2024). जैविक खेती में खरपतवार प्रबंधन कैसे करें. In BIO VET INNOVATOR Magazine (Vol. 1, Issue 1, pp. 5–6). BIO VET INNOVATOR Magazine. https://doi.org/10.5281/zenodo.12703021